ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(9): 186-188
www.allresearchjournal.com
Received: 16-07-2016
Accepted: 17-08-2016

प्रतिभा मिश्रा
प्रो. शुभा व्यास (प्रोफेसर) जयपुर
नेशनल यूनिवर्सिटी,जयपुर

Correspondence
प्रतिभा मिश्रा
प्रो. शुभा व्यास (प्रोफेसर) जयपुर
नेशनल यूनिवर्सिटी,जयपुर

विद्यार्थी–शिक्षकों में मानवाधिकार जागरूकता व अध्यापन प्रभावशीलता का अध्ययन

प्रतिभा मिश्रा

वर्तमान विश्व अनेक युद्धों का अनुभव कर चुका है जिनमें से कई तो अति विनाशकारी सिद्ध हुए हैं। दो युद्धों को विश्व युद्ध के नाम से भी जाना जाता है। प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात विश्व में शांति स्थापना एवं नागरिक अधिकारों की स्थापना हेतु राष्ट्र संघ की स्थापना हुई किन्तु यह संस्था अपनी स्थापना के उद्देश्यों में सफल नहीं हुई एवं परिणामस्वरूप द्वितीय विश्व युद्ध हुआ। द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात संयुक्त राष्ट्र संघ का गठन हुआ और उसके नेतृत्व में विभिन्न देशों के राष्ट्राध्यक्षों की सहमति से 10 दिसम्बर, 1948 को मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा की गई
संयुक्त राष्ट्र की सामान्य सभा द्वारा स्वीकृत एवं घोषित मानवाधिकारों की इस सार्वभौमिक घोषणा में सर्वाधिक प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें मानवाधिकारों के प्रचार हेतु शिक्षा को एक आवश्यक अभिकरण एवं माध्यम के रूप में स्वीकार किया गया है। इस प्रकार विश्व में मानवाधिकार शिक्षा और अध्यापन प्रचारित व प्रसारित किये जाने चाहिये।

अध्ययन की आवश्यकता

व्यक्ति को अपने जीवन के लिए विभिन्न प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ती हेतु अनेक प्रकार की सुविधाओं की आवश्यकता रहती है। वह इसके आधार पर ही सफलतापूर्वक अपने जीवन को व्यतीत कर पाता है। जब तक उसके द्वारा जीवन की इन सभी आवश्यकताओं की पूर्ति उसके द्वारा भली–भाँति नहीं की जाती है, तब तक उसका सर्वांगीण विकास नहीं किया जा सकता। इसलिए यह अति आवश्यक माना जाता है कि मानव को अपनी सभी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विभिन्न प्रकार के अधिकार प्रदान किये जाये जिससे वह अपने जीवन में पूर्णता को प्राप्त कर सके।
सम्पूर्ण विश्व की सरकारों व संगठनों द्वारा किये जा रहे प्रयासों तथा मानवाधिकारों को पाठ्यक्रम में शामिल किये जाने के उपरान्त भी शिक्षकों में मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता नहीं आ पाई है। इस क्षेत्र से सम्बन्धित पूर्व में भी अनेक शोध कार्य हुए हैं। जैसे जस किरण सिंह दयाल एवं सुखवंत कौर (2015) द्वारा पंजाब मा. शि. बोर्ड एवं केन्द्रिय मा. शि. बोर्ड से सम्बद्ध विद्यालयों की मानवाधिकार जागरूकता का अध्ययन किया गया और निष्कर्ष में पाया कि पंजाब मा. शि. बोर्ड व केन्द्रिय मा. शि. बोर्ड के विद्यार्थियों की जागरूकता में सार्थक अन्तर है। अतः शोधकर्त्री ने प्रस्तुत शोध का विषय विद्यार्थी–शिक्षकों में मानवाधिकार जागरूकता व अध्यापन प्रभावशीलता का अध्ययन चुना है। जो वर्तमान समय में आवश्यक एवं औचित्यपूर्ण है।

शोध हेतु निम्नांकित उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है

- विद्यार्थी शिक्षकों में मानवाधिकार जागरूकता का अध्ययन करना।
- विद्यार्थी शिक्षकों में अध्यापन प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के लिये निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया हैं।

परिकल्पनाएँ

1. पुरूष व महिला विद्यार्थी शिक्षकों की मानवाधिकार जागरूकता के प्राप्तांकों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय एवं राजस्थान विश्वविद्यालय के विद्यार्थी शिक्षकों की मानवाधिकार जागरूकता के प्राप्तांकों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
3. पुरूष व महिला विद्यार्थी शिक्षकों की अध्यापन प्रभावशीलता के प्राप्तांकों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

4. महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय एवं राजस्थान विश्वविद्यालय से सम्बद्ध शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी शिक्षकों की अध्यापन प्रभावशीलता के प्राप्तांकों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन के अन्तर्गत महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर व राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर की जनसंख्या में से 404 विद्यार्थी शिक्षकों का चयन किया है।

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श का चयन

शोधार्थी द्वारा शोध कार्य के लिये जयपुर जिले के व टोंक जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के 404 विद्यार्थियों का डी. डब्ल्यू. मोर्गन की सारिणी के आधार पर चयन किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

शोधकर्ता ने शोध के उद्देश्यों की दृष्टि से निम्न प्रमाणित परीक्षणों को अपने शोधकार्य में प्रयोग किया है।

- विशाल सूद व आरती आनन्द द्वारा निर्मित मानवाधिकार जागरूकता परीक्षण ।
- प्रमोद कुमार एवं डी. एन. मूथा द्वारा निर्मित शैक्षिक प्रभावशीलता परीक्षण।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

शोधकार्य में निम्नलिखित सांख्यिकीय तकनीक का प्रयोग किया है,

- टी परीक्षण

परिकल्पना 1

पुरूष व महिला विद्यार्थी शिक्षकों की मानवाधिकार जागरूकता के प्राप्तांकों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या–1

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–अनुपात	सार्थकता स्तर
पुरूष विद्यार्थी शिक्षक	211	58.78	9.11	0.88	असार्थक
महिला विद्यार्थी शिक्षक	193	58.15	11.34		

df= N1+N2-2 df= 211+193-2 df= 402

तालिका संख्या 1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी शिक्षक मानवाधिकार के प्रति समान जागरूकता रखते हैं।

परिकल्पना 2

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय एवं राजस्थान विश्वविद्यालय के विद्यार्थी शिक्षकों की मानवाधिकार जागरूकता के प्राप्तांकों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या–2

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–अनुपात	सार्थकता स्तर
महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय के विद्यार्थी शिक्षक	204	56.25	9.65	4.04	सार्थक
राजस्थान विश्वविद्यालय के विद्यार्थी शिक्षक	200	60.76	10.32		

df= N1+N2-2 df= 204+200-2 df= 402

तालिका संख्या 2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय एवं राजस्थान विश्वविद्यालय से सम्बद्ध शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी शिक्षकों की मानवाधिकार जागरूकता में सार्थक अन्तर है।
दोनों ही समूहों के मध्यमान से यह स्पष्ट होता है कि राजस्थान विश्वविद्यालय से सम्बद्ध शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी शिक्षक विद्यालय में प्रवेश के कठोर नियमों, धरना–प्रदर्शन सरकार द्वारा देश के प्रत्येक व्यक्ति को रोजगार उपलब्ध कराने के क्षेत्र में महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय से सम्बद्ध शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी शिक्षकों से अधिक जागरूकता रखते हैं।

परिकल्पना 3

पुरूष व महिला विद्यार्थी शिक्षकों की अध्यापन प्रभावशीलता के प्राप्तांकों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या–3

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–अनुपात	सार्थकता स्तर
पुरूष विद्यार्थी शिक्षक	211	284.97	38.65	4.44	सार्थक
महिला विद्यार्थी शिक्षक	193	282.48	42.35		

df= N1+N2-2 df= 211+193-2 df= 402

तालिका संख्या 3 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय एवं राजस्थान विश्वविद्यालय से सम्बद्ध शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत महिला एवं पुरूष विद्यार्थी शिक्षकों की अध्यापन प्रभावशीलता में भिन्नता है।
दोनों ही समूहों के मध्यमान से यह स्पष्ट होता है कि पुरूष विद्यार्थी शिक्षक विद्यालय के दैनिक कार्यों में सहयोग करने, साथी अध्यापकों के साथ भातृत्व एवं मित्रतापूर्ण सम्बन्धों का निर्वहन करने, संस्था के हित विरूद्ध कार्य ना करने के प्रति महिला विद्यार्थी शिक्षकों से अधिक समानता नहीं रखते हैं।

परिकल्पना 4

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय एवं राजस्थान विश्वविद्यालय से सम्बद्ध शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी शिक्षकों की अध्यापन प्रभावशीलता के प्राप्तांकों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या–4

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–अनुपात	सार्थकता स्तर
म.द.स. विश्वविद्यालय के विद्यार्थी शिक्षक	204	271.86	45.32	3.11	सार्थक
राजस्थान विश्वविद्यालय के विद्यार्थी शिक्षक	200	295.91	30.30		

df= N1+N2-2 df= 204+200-2 df= 402

तालिका संख्या 4 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय एवं राजस्थान विश्वविद्यालय से सम्बद्ध शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी शिक्षकों की अध्यापन प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर है।

दोनों ही समूहों के मध्यमान से यह स्पष्ट होता है कि राजस्थान विश्वविद्यालय से सम्बद्ध शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी शिक्षक विद्यार्थियों को परामर्श देने, सभी विद्यार्थियों के साथ समान व्यवहार करने, वरिष्ठ साथियों का सम्मान करने, विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं का धैर्यपूर्वक समाधान करने के प्रति महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय से सम्बद्ध शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी शिक्षकों से अधिक समानता नहीं रखते हैं।

निष्कर्ष

1. पुरूष व महिला विद्यार्थी शिक्षकों की मानवाधिकार जागरूकता में सार्थक भिन्नता नहीं पायी गयी।
2. महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय एवं राजस्थान विश्वविद्यालय से सम्बद्ध शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी शिक्षकों की मानवाधिकार जागरूकता में सार्थक भिन्नता पायी गयी।
3. पुरूष व महिला विद्यार्थी शिक्षकों की अध्यापन प्रभावशीलता में सार्थक भिन्नता पायी गयी।
4. महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय एवं राजस्थान विश्वविद्यालय से सम्बद्ध शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी शिक्षकों की अध्यापन प्रभावशीलता में सार्थक भिन्नता पायी गयी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Arjun D, Supta D. Human rights – a source book. New Delhi: NCERT. 1996.
2. Aggarwal JC. Essentials of educational technology: teaching and learning innovations in education. New Delhi: Vikas Publishing House. 1995.
3. Baxi U. Human wrongs and human rights. New Delhi: Anand Publications. 2003.
4. Best JW, Kahn JV. Research in education. New Delhi: Prentice Hall of India. 2004.
5. Flood J, Patrik N. The effectiveness of UN human right institutions. London: Praeger. 1996.
6. Kalaiah A. Human rights in international. New Delhi: Deep and Deep Publication. 1990.